B.M.A. College, Baheri, Darbhanga
Date: 18/09/2020

B.A. I (Gen & Hons)
Deptt. of Sociology

By: Dr. Rajesh Kumar
Sociology

विषय :- सामाजिक नियंत्रण के अभिकरण

यह देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं, पहला आन्तरिक जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के विचार और विश्वास होते हैं एवं दूसरा, बाह्य, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के बाहरी आचरण एवं व्यवहार आते हैं और व्यक्ति के इन दोनों पक्षों को नियंत्रण करने हेतु समाज को कुछ अभिकरणों की आवश्यकता पड़ती है। विशेषकर समाजशास्त्री के अभिकरणों को दो भागों में बांटा गया है - (1) औपचारिक एवं (2) अनौपचारिक।

• औपचारिक अभिकरण:
• राज्य के कानून: कानून यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति के अधिकार और कर्तव्य क्या है एवं उसकी सीमाएँ क्या है?
• प्रचार: प्रचार एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्तियों को विभिन्न तथ्यों से अवगत कराकर, विचारों को प्रभावित कर लोगों के बाह्य एवं आन्तरिक पक्षों को नियंत्रित करता है।
• नेतृत्व: समाजों में कुछ व्यक्तियों के पास निर्देश देने एवं पालन कराने के गुण होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने आदर्शों, व्यवहार एवं विचारों से निर्देश देते हैं, कुछ में अनुसरण करने के गुण होते हैं।
• शिक्षा: कहा जाता है कि शिक्षा एक औजार है, जो व्यक्ति में सोचने, समझने, विचार करने की क्षमता प्रदान करता है।

• अनौपचारिक अभिकरण:
• लोकरीतियाँ: यह व्यवहार करने की वह विधि है जिन्हे समाज मान्यता प्रदान करता है।
• लोकाचार एवं रूढ़ियाँ: यह वह व्यवहार होता है, जिन्हे समाज कल्याण के लिए आवश्यक समझा जाता है, जो सम्पूर्ण समाज के लिए कल्याणकारी होता है।
• प्रथाएँ: एक वैसा व्यवहार जो एक-पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है और जो प्रथाएँ कहलाती हैं।
• नैतिकता: नैतिकता का आशय उचित एवं अनुचित से है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यों से यह आशा करता है कि वह प्रत्येक स्थिति में सही आचरण एवं व्यवहार करे।
• धर्म: धर्म एक अलौकिक शक्ति एवं विश्वास है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी विचार, व्यवहार, एवं आचरण में आस्था व्यक्त करते हैं।
• परिवार: व्यक्ति परिवार का प्राथमिक सदस्य होता है। इनके सदस्यों के बीच आपसी-सम्बन्ध घनिष्ठ होते हैं जिससे परिवार के सम्मान एवं मर्यादा के कारण व्यक्ति अपने परिवार के बताये गए रास्तों पर चलता है, जो
परिवार के ...

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Deptt of Sociology | Date: 18/09/2020

B.A.(Hons)-II, | By: Dr Rajesh Kr, Sociology

Paper-IV (Social Research)

विषय:- सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण में अंतर

आजकल सामाजिक अनुसंधान एवं सामाजिक सर्वेक्षण के बीच भ्रम की स्थिति बन रही है जबकि सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक अनुसंधान की एक विशिष्ट विधि मानते है। दोनो में कुछ मौलिक अन्तर है, जो निम्न प्रकार से है:-

सामाजिक सर्वेक्षण	सामाजिक अनुसंधान
• यह विशिष्ट समस्याओं, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों से सम्बन्धित होता है।	• इसका सम्बन्ध सामान्य तथा अमूर्त समस्याओं से होता है।
• इसका उद्देश्य तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा विशेष समस्या में प्रचलित ज्ञान का उपयोग होता है। इसका स्वभाव व्यावहारिक होता है।	• इसका उद्देश्य दीर्घकालीन तथा विस्तृत क्षेत्र का अनुसंधान करना होता है। जिससे अधिक शुद्ध विधियों एवं सिद्धांतो का निरूपण किया जा सके।
• इसका उद्देश्य मनुष्य के जीवन में सुधार करना तथा उसकी उन्नति के मार्ग की बाधाओं का पता लगाकर दूर करना होता है।	• इसका उद्देश्य ज्ञान में वृद्धि तथा अनुसंधान की विधियों में सुधार करना होता है।
• यह भविष्य की उपकल्पना का आधार बनता है।	• यह उपकल्पना बनाने का कार्य करता है जिससे नवीन सिद्धांत का निर्माण होता है।
• यह ज्यादातर व्यावसायिक होता है।	• यह अनुसंधानिक होता है।
• इसके लिए उपकल्पना आवश्यक नहीं है।	• इसमें आगे बढ़ने के लिए उपकल्पना आवश्यक है।
• यह विस्तृत अध्ययन पर बल देता है।	• यह सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन पर बल देता है।
• सामाजिक सर्वेक्षण एक सहकारी प्रक्रिया है चूँकि इसमें विस्तृत रूप से सूचना संग्रह किया जाता है अतः इसमें अध्ययनकर्ता के साथ साथ एक दल भी मिलकर कार्य करता है।	• सामाजिक अनुसंधान एक व्यक्तिगत अध्ययनपद्धति होता है चूँकि इसमें गहन अध्ययन करना होता है। अतएव इसमें अध्ययनकर्ता अकेला ही अध्ययन करता है।